राज्य अध्याय 33

1	प्रार्थना करना

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट)	*(शांत समय)* **यशायाह 1–4**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यशायाह 1,2,3 और 4) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट)	*(रोमियों में प्रमुख पद)* **(13) रोमियों 10:9–10**

दो–दो करके ***पुनरावलोकन करें।***

(13) रोमियों 8:9–10। कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, ओर अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओ में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।

4	**शिक्षा देना** (85 मिनट)	*(यीशु मसीह के दृष्टांत)* **उतावला निर्माणकर्ता और लापरवाह राजा**

लूका 14:28–30 में "उतावले निर्माणकर्ता का दृष्टांत" और
लूका 14:30–31 में "लापरवाह राजा का दृष्टान्त"
परमेश्वर के राज्य में शिष्यता के बारे में दृष्टान्त हैं।

"एक दृष्टांत" दिव्य अर्थ के साथ एक सांसारिक कहानी होती है। यह एक सत्य–से–जीवन की कहानी या चित्रण है जो एक आध्यात्मिक सत्य को सिखाने के लिए बनाया गया है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने और लोगों को उनकी स्थिति की वास्तविकता और उनके नवीकरण की आवश्यकता के साथ सामना करने के लिए सामान्य और रोजमर्रा की घटनाओं का उपयोग किया। हम दृष्टान्तों के अध्ययन के लिए छह दिशानिर्देशों का उपयोग करके इन दृष्टान्तों का अध्ययन करेंगे (देखें नियमावली 9, परिशिष्ट 1)।

क. उतावले निर्माणकर्ता का दृष्टांत।

पढ़ें लूका 14:25–30।

1. **<u>दृष्टान्त की स्वाभाविक कहानी को समझें।</u>**

परिचय। दृष्टान्त को आलंकारिक भाषा में बताया गया है और दृष्टान्त का आत्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।
चर्चा करें। कहानी के वास्तविक अंश क्या हैं?
ध्यान दें।

मीनार। एक मीनार एक संरचना हो सकती है जैसे कि पहरे की मीनार और गोदाम के रूप में काम करने के लिए एक दाख की बारी में बनाया गया है या यह एक पूरे (यशायाह 5:2) फार्म की इमारत हो सकती है।

कीमत का अनुमान लगाना। हर अच्छा व्यवसायी किसी भी परियोजना की लागत का आंकलन करता है।

हर कोई जो देखता है। तमाशबीन हमेशा स्थितियों को मजाक में बदलने या किसी अन्य व्यक्ति को नीचा दिखाने के लिए तैयार होने के लिए बदनाम होते हैं, खासकर जब वह विफल हो जाता है।

---

2. **<u>तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टान्त के अंशों को निर्धारित करें।</u>**

परिचय। दृष्टांत की ''कहानी'' का संदर्भ ''स्थान'' और ''दृष्टांत की व्याख्या या प्रयोग'' से मिलकर हो सकता है। दृष्टांत का स्थान दृष्टांत को बताने के *मौके* को बता सकता है, या दृष्टांत को बताने के समय *परिस्थितियों* का वर्णन कर सकता है। स्थान आमतौर पर दृष्टांत की कहानी से *पहले* पाया जाता है और स्पष्टीकरण या उपयोग आमतौर पर दृष्टांत की कहानी के बाद पाया जाता है।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का स्थान, कहानी और स्पष्टीकरण या उपयोग क्या है?
ध्यान दें।

(1) दृष्टान्त का स्थान लूका 14 :25 –27 में निहित है

यीशु पेरिया के द्वारा से यरूशलेम के रास्ते पर था। वह शिष्यत्व के बारे में एक बड़ी भीड़ को संबोधित कर रहे थे। यीशु *सिखाता है* कि जो कोई भी उसका शिष्य बनना चाहता है उसे समझना चाहिए कि शिष्यत्व से जुड़ने की एक कीमत है। यह यीशु नहीं था जिसने कार्य को पूरा करने की कीमत का अनुमान लगाया था, क्योंकि वह पहले से ही जानता था कि लोगों को बचाने के लिए उसे क्रूस पर मरना होगा। और वह यह भी जानता था कि परमेश्वर के राज्य के निर्माण का कार्य केवल सच्चे शिष्यों के साथ ही पूरा होगा, न कि ऊपरी अनुयायियों के साथ। यीशु को नहीं, बल्कि जो लोग शिष्य बनने की इच्छा रखते हैं, उन्हें शिष्यत्व की कीमत का अनुमान लगाना चाहिए। इस दृष्टांत का संदर्भ उन लोगों के बारे में बोलता है जिन्हें एक शिष्य के रूप में यीशु मसीह के अनुसरण करने की कीमत पर विचार करना चाहिए।

शिष्यत्व के विषय में यीशु का उपदेश निम्नलिखित हैः

सभी सच्चे मसीहियों को शिष्य बनना चाहिए। प्रेरितों 11: 26 बताता है कि शिष्यों को पहली बार एंटिओक (सीरिया) में मसीही कहा गया था। हमें सावधान रहना चाहिए कि एक मसीही और मसीह के शिष्य के बीच एक तीक्ष्ण अंतर न खींचे। यीशु मसीह ने मसीहियों के विभिन्न वर्गों का परिचय नहीं दिया, जैसे कि एक शिष्य एक सामान्य मसीही की तुलना में एक उच्च वर्ग है!

अक्सर भ्रम उत्पन्न होता है क्योंकि हर जगह कुछ लोग खुद को ''मसीही'' कहते हैं, जबकि उनके पास

मसीह के एक शिष्य की कोई विशेषता नहीं है। वे वास्तव में केवल नाम में ''मसीही'' हैं और व्यवहार में नहीं हैं और इसलिए वास्तविक मसीही नहीं हैं!

नए नियम की शुरुआत में, सभी लोग जो यीशु मसीह पर विश्वास करते थे और उसके पीछे चलते थे ''शिष्य'' कहलाते थे। और फिर भी, मसीह उन लोगों के बीच प्रतिष्ठित था जो सच्चे शिष्य थे और जो सच्चे शिष्य नहीं थे (यूहन्ना 6:60-69)। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, एक व्यक्ति ''शिष्य'' बन गया जब उसने यीशु मसीह में विश्वास किया (प्रेरितों 9:26; 13:48-52)। इनमें से कुछ शिष्य अभी भी बहुत अपरिपक्व थे और आपस में फूट उत्पन्न करते थे (प्रेरितों 6:1-2), जबकि अन्य शिष्य काफी परिपक्व थे, जैसे तीमुथियुस। (प्रेरितों. 16:1-2)।

एक शिष्य की विशिष्ट विशेषताओं को स्पष्ट रूप से यीशु मसीह द्वारा सुसमाचार (मत्ती 10:24-25; 13:52; 28:19-20; लूका 6:40;14:26-27,33; यूहन्ना 8:31-32; 13:34-35; 15:5-8)। में पढ़ाया जाता है (मिट्टी) यह यीशु मसीह की मनसा है कि परमेश्वर की कृपा से जो भी उनको मानते हैं, उन्हें ''एक शिष्य'' या ''परिपक्व मसीही'' की इन विशेषताओं को विकसित करना चाहिए।

एक शिष्य यीशु मसीह का अनुयायी है। यीशु ने विभिन्न प्रकार के लोगों को अपने शिष्य बनने के लिए बुलाया। उसने उनसे कहा, "आओ और देखो" या ''मेरे पीछे आओ''। शिष्यत्व के लिए यीशु के आह्वान का कोई सामाजिक अवरोध नहीं था। उनके शिष्यों में पतरस, याकूब और यूहन्ना जैसे पापी मछुआरे थे, एक राजनैतिक कट्टरपंथी था, जिसको शिमोन कहा जाता था और मत्ती नामक एक तिरस्कृत कर वसूलने वाला। शिष्यत्व का आह्वान ''उसके साथ'' होने का आह्वान था। यीशु के व्यक्ति की शक्तिशाली और प्रत्यक्ष छाप ने, उनके शक्तिशाली शिक्षण के साथ, उन्हें अपने शिष्य बनने के लिए प्रेरित किया (यूहन्ना 1:35-51; लूका 5:1-11; मरकुस 3:13-15)।

एक शिष्य यीशु मसीह से सीखने वाला एक शिक्षार्थी है। एक शिष्य देखने, सुनने और अनुकरण करने के द्वारा सीखता है। वह जैसे जैसे मसीह का अनुसरण करता है वह सीखता है। वह नजदीक से यीशु के जीवन और सेवकाई का अवलोकन करता है। वह यीशु मसीह और प्रेरितों के शिक्षण और उदाहरण दोनों से सीखता है। वह अनुभव और अभ्यास के माध्यम से भी सीखता है। (यूहन्ना 13:13-15; मत्ती 4:23; प्रेरितों. 4:13; फिलिप्पियों 4:9-12)।

यीशु मसीह के एक सच्चे शिष्य की पहली विशेषता ''घृणा'' करना है। इसका मतलब है कि एक सच्चा शिष्य यीशु मसीह के लिए पूरी तरह समर्पित है। पद 26 के अनुसार, एक शिष्य को यीशु मसीह का शिष्य बनने के लिए अपने परिवार और अपने जीवन से ''घृणा'' करनी चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि वह अपने माता-पिता और परिवार से नापसंद करने या उन्हें त्यागने या उन्हें भूल जाने के अर्थ में घृणा करे। बाइबल मसीहियों को अपने माता-पिता की देखभाल करने, अपनी पत्नियों से प्यार करने, अपने बच्चों को प्रभु की आज्ञा में पालने और अपने पड़ोसी से भी वैसा ही प्रेम करने की आज्ञा देती है जैसी वे स्वयं से प्यार करते हैं।

''घृणा'' शब्द का अर्थ ''कम प्राथमिकता देना'' है जैसा कि दृष्टान्त मत्ती 10: 37 में दिखता है। ''जो कोई अपने पिता या माता को मुझसे अधिक प्यार करता है, वह मेरे योग्य नहीं है; जो कोई अपने पुत्र या पुत्री को मुझसे अधिक प्यार करता है, वह मेरे योग्य नहीं है।'' यदि परिवार के सदस्य और मसीह के बीच टकराव होता है, और ''एक परिवार के सदस्य की आज्ञा मानन'' और ''मसीह को मानने'' के बीच में चुनाव करना हो, तो परिवार के सदस्य की इच्छा, चाहे वह कितनी भी बड़ी क्यों न हो, अस्वीकार करी जानी चाहिए। शिष्य

की सर्वोच्च निष्ठा मसीह के प्रति है और कोई अन्य संबंध इसे बदल नहीं सकता है। वह मसीह को इस तरह बिना शर्त अपने परमेश्वर (राजा) और मार्गदर्शक के रूप में चुनता है कि वह अन्य सभी निष्ठाओं और संबंधों को अपनी निष्ठा और यीशु मसीह के प्रति समर्पण के अधीन करता है। यीशु मसीह को हमेशा सर्वश्रेष्ठ (कुलुस्सियों 1: 18) होना चाहिए! इस प्रकार, एक शिष्य किसी अन्य रिश्ते से अधिक यीशु मसीह से प्यार करता है। वह अपने माता–पिता, अपने परिवार और यहां तक कि खुद के ऊपर भी यीशु मसीह को प्राथमिकता देते हैं।

यीशु मसीह के एक सच्चे शिष्य की दूसरी विशेषता है उसका क्रूस उठाना।
इसका मतलब यह है कि एक सच्चा शिष्य अपनी महत्वाकांक्षाओं और सुरक्षा का त्याग करता है। वह दुख के बलिदान को स्वीकार करता है जो कि एक प्रतिबद्ध मसीही को लाना चाहिए जब वह ठुकरा दिया जाता है, अस्वीकार किया जाता है, उपहास किया जाता है, अत्याचार किया जाता है और उसे सताया जाता है। यह ''अपने स्वयं के क्रूस को ले जाने'' का वास्तविक अर्थ है। (लूका 14:26–27)
इस बिंदु पर, यीशु ने ''उतावले निर्माणकर्ता'' के दृष्टांत को बताया।

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका 14 : 28 –30 में शामिल ह

(3) दृष्टांत की व्याख्या या उपयोग नहीं दिया गया है।

इसे संदर्भ से काट दिया जाना चाहिए। एक मसीही को उसके कार्य करने से पहले शिष्यत्व की कीमत का पता लगाना चाहिए।

---

3. **बाइबल में समानांतर और विपरीत मार्गों के साथ दृष्टांत की तुलना करें।**

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टान्तों में सच्चाई समानांतर या विपरीत सत्य है जो बाइबल के अन्य वाक्यांशों में पढ़ाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण परस्पर – सन्दर्भ खोजने की कोशिश करें जो हमें दृष्टांत की व्याख्या करने में मदद करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टान्त की व्याख्या की जाँच करें।
खोजें और चर्चा करें। बाइबल के ये प्रत्येक वाक्यांश क्या सिखाते है और कैसे सिखाते हैं, उसकी तुलना दृष्टान्त की शिक्षा से करें?

ध्यान दें। यीशु किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं। संदर्भ के संबंध में विवरण की व्याख्या की जानी चाहिए।

एक मीनार का निर्माण। यह एक प्रासंगिक विवरण है। मीनार का निर्माण एक बड़ी परियोजना है। इसमें बहुत सारा पैसा, बहुत सारी ऊर्जा और बहुत सारा समय खर्च होता है। संदर्भ में यह ''यीशु मसीह का शिष्य बनने'' को दर्शाता है। यीशु मसीह का शिष्य बनने का निर्णय एक महत्वपूर्ण निर्णय है। यह आपकी वित्तीय स्थिति को प्रभावित कर सकता हैय अपने माता–पिता, पत्नी और बच्चों, भाइयों और बहनों से आपका रिश्ताय और यह आपके पूरे जीवन की दिशा बदल सकता है!

कीमत का अनुमान लगाकर पहले यह देखना कि वह कार्य पूरा कर सकता है या नहीं। यह एक आवश्यक विवरण है, क्योंकि यह दृष्टांत का केंद्रीय बिंदु या मुख्य संदेश है। प्रत्येक व्यक्ति पहले यीशु मसीह के शिष्य बनने की कीमत पर विचार करने के लिए जिम्मेदार है। उसे यह तय करना होगा कि वह यीशु मसीह को अपने जीवन में, अपने रिश्तों में, अपनी योजनाओं में और अपने निर्णयों आदि में पहला स्थान देने के लिए तैयार है या नहीं।

4. **दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानें।**

परिचय। दृष्टांत का मुख्य संदेश या तो स्पष्टीकरण या उपयोग में या कहानी से ही मिला है। जिस तरह से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांतों को समझाया या उपयोग किया है, हम जानते हैं कि हमें दृष्टान्तों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। एक दृष्टांत में सामान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ होता है, बनाने के लिए एक केंद्रीय बिंदु। इसलिए, हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में एक आत्मिक सच्चाई खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि एक मुख्य पाठ की तलाश करनी चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 14:28-30 में उतावले निर्माणकर्ता का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में शिष्यत्व" के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "प्रत्येक व्यक्ति यीशु मसीह का अनुसरण करने से पहले शिष्यत्व की कीमत का पता लगाने के लिए जिम्मेदार है। छलांग लगाने से पहले उसे देखना होगा।"

शिष्यत्व परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के लोग अपने शेष जीवन के लिए यीशु मसीह के पालन की कीमत पर विचार करते हैं। संदर्भ में, किसी व्यक्ति को अपने माता-पिता, अपने परिवार (पत्नी और बच्चों, अपने भाइयों और बहनों) और अपने स्वयं के जीवन, महत्वाकांक्षाओं और इच्छाओं के संबंध में विशेष रूप से शिष्यत्व की कीमत पर विचार करना चाहिए। यह संभव है कि उसे अपने माता-पिता, परिवार और यहां तक कि अपनी महत्वाकांक्षाओं और सुरक्षा के खिलाफ चुनना पड़ सकता है।

---

5. **बाइबल में समानांतर और विपरीत मार्गों के साथ दृष्टांत की तुलना करें।**

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टान्तों में सच्चाई समानांतर या विपरीत सत्य है जो बाइबल के अन्य वाक्यांशों में पढ़ाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण परस्पर -सन्दर्भ खोजने की कोशिश करें जो हमें दृष्टांत की व्याख्या करने में मदद करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टान्त की व्याख्या की जाँच करें।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के ये प्रत्येक वाक्यांश क्या सिखाते है और कैसे सिखाते हैं, उसकी तुलना दृष्टान्त की शिक्षा से करें?

मत्ती 6:25-34। शिष्यत्व की कीमत सबसे पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की तलाश करना है। यह भोजन, पेय और कपड़े जैसी भौतिक चीजों को खोजने से ऊपर की तलाश है।

मत्ती 10:37-39। शिष्यत्व की कीमत यीशु मसीह को प्यार करना है उससे अधिक जितना कोई अपने माता-पिता, पत्नी या बच्चों से प्यार करता है।

जब उसे ठुकरा दिया जाता है, जब उसे छोड़ दिया जाता है, उसे तिरस्कृत किया जाता है, उसका अपमान किया जाता है, उस पर दोष लगाया जाता है तब भी वह एक समर्पित मसीही की तरह त्याग करने के लिए तैयार रहता है। यह यीशु मसीह और परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए अपने जीवन को खोने के लिए चुनना है।

मत्ती 7:14; यूहन्ना 16:33; 2तीमुथियुस 3:12। प्रत्येक व्यक्ति को शिष्यत्व के लिए प्रतिबद्धता बनाने से

पहले शिष्यत्व की कीमत की गणना करनी चाहिए। उसे छलांग लगाने से पहले देखना होगा। मसीह का अनुसरण करना आसान नहीं है, क्योंकि यह ऐसा है जैसे एक संकीर्ण द्वार में प्रवेश करना और एक संकरे रास्ते पर चलना (चढ़ाई)। इसमें अक्सर एक या दूसरे प्रकार की परेशानी और उत्पीड़न शामिल होता है। कुछ लोग कुछ समय के लिए मसीह का अनुसरण करते दिखते हैं, लेकिन फिर (इब्रानियों 6:4-8; 1यूहन्ना 2:19) छोड़ देते हैं जैसे यहूदा (यूहन्ना 6:70-71) और शायद दीमास (2तीमुथियुस 4:8,10; तुलना करें मत्ती 7:22-23 से; यूहन्ना 6:66)। लेकिन मसीह में वास्तविक विश्वासी (मत्ती 11:12) अंततः कभी नहीं छोड़ते हैं (यूहन्ना 10:27-28; फिलिप्पियों 1:6; 2तीमुथियुस 2:19) भले ही वे (नीतिवचन 24:16), कुछ अवधि के लिए ठोकर खाते हों जैसे पतरस (लूका 22:31-32; यूहन्ना 21:15-17)।

ख. लापरवाह राजा का दृष्टान्त

पढ़ें लूका 14:31-33।

लूका 14:31-32 कहता है, "या कौन ऐसा राजा है जो दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो, और पहले बैठकर विचार न कर ले कि जो बीस हजार लेकर मुझ पर चढ़ा आता है, क्या मैं दस हजार लेकर उसका सामना कर सकता हूँ, या नहीं? नहीं तो उसके दूरे रहते ही वह दूतों को भेजकर मिलाप करना चाहेगा।"

1. <u>दृष्टान्त की स्वाभाविक कहानी को समझें।</u>

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक अंश क्या हैं?

ध्यान दें।

युद्ध लड़ते हुए राजा। अन्य राजाओं के साथ युद्ध करने वाले राजाओं के वर्णन ने दुनिया के इतिहास की पुस्तकों को भर दिया है।

एक लड़ाई के परिणाम को देखते हुए। युद्ध करने के लिए बाहर जाने से पहले एक राजा और उसके सेनापतियों का यह एक मुख्य कार्य है। विशेष रूप से जब उन्हें पता चलता है कि वे संख्या में अधिक हैं, तो उन्हें निर्णय लेने के लिए मजबूर किया जाता हैः या तो लड़ाई हार जाएं या शांति के लिए विनती करें।

एक प्रतिनिधिमंडल भेजना और शांति की शर्तों के लिए पूछना। यह सभी बाधाओं के खिलाफ लड़ाई में जाने और एक अपूरणीय हार का सामना करने से बेहतर निर्णय है।

---

2. <u>तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टान्त के अंशो को निर्धारित करें।</u>

खोजें और चर्चा करें। दृष्टांत का स्थान, कहानी और व्याख्या या उपयोग क्या है?

ध्यान दें।

यह उतावले निर्माणकर्ता के दृष्टांत के समान है।

(1) दृष्टान्त का स्थान लूका 14:25-30 में निहित है

(2) दृष्टांत की कहानी लूका 14:31-32 में शामिल है

(3) दृष्टांत की व्याख्या या प्रयोग लूका 14:33-35 में निहित है

प्रयोग कहानी में निहित हैः यदि किसी को कुछ करना है, तो सबसे समझदार तरीके से कार्य करें! अगर कोई

जीत नहीं सकता, तो शांति के लिए निवेदन करो!
शिष्यत्व के विषय में यीशु का उपदेश निम्नलिखित हैः

यीशु मसीह के <u>एक सच्चे शिष्य की तीसरी विशेषता</u> यह है की जो कुछ उनके पास सब छोड़ देना है।
इसका मतलब यह है कि एक सच्चा शिष्य यीशु मसीह के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। पद 33 कहता है, "तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।" इस प्रकार, एक शिष्य इस संसार की सभी संपत्ति, संबंधों और महत्वाकांक्षाओं से ऊपर मसीह को प्राथमिकता देता है। वह <u>कुछ भी और सब कुछ छोड़ देने के लिए तैयार होता है, या यीशु मसीह के शिष्य के रूप में पालन करने के लिए हर किसी को या किसी को विदा कहने के लिए तैयार होता</u> है। एक शिष्य धन, सफलता, प्रसिद्धि और शक्ति के प्रेम के कारण खुद को शिष्य होने में अयोग्य घोषित नहीं होने देता।

यदि एक तरफ भौतिकवाद, सफलता, प्रसिद्धि या शक्ति को पाने और दूसरे हाथ पर यीशु मसीह का पूरी तरह से पालन करने के बीच संघर्ष हो, तो भौतिकवाद, सफलता, प्रसिद्धि या शक्ति का पीछा अस्वीकृत कर दिया जाना चाहिए। यदि चुनाव पैसा बनाने और मसीह का पूरी ईमानदारी से पालन करने के बीच है, तो भौतिकवाद और सांसारिक सफलता के आकर्षण को अस्वीकृत कर दिया जाना चाहिए। <u>एक शिष्य की सर्वोच्च प्रतिबद्धता यीशु मसीह के लिए है और कोई अन्य प्रतिबद्धता इसे बदल नहीं सकती है!</u>

यीशु मसीह के <u>एक सच्चे शिष्य की चौथी विशेषता</u> नमक के समान होना है।
इसका अर्थ है कि एक सच्चे शिष्य का उसके समाज पर अच्छा प्रभाव होता है।. पद 34–35 कहता है, "नमक तो अच्छा है, परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा। वह न तो भूमि के और न खाद के काम आता हैः उसे तो लोग बाहर फेंक देते हैं।" नमक एक ऐसा पदार्थ है जो एक तरफ विकृति का सामना करता है और दूसरी तरफ स्वाद प्रदान करता है। मसीही शिष्यों को वास्तविक ''नमक'' जैसा होना चाहिए। उन्हें अपने समाज में नैतिक और आत्मिक क्षय का मुकाबला करना चाहिए और उनके शब्दों और कार्यों को अपने आस–पास के लोगों के लिए एक सुखद स्वाद की तरह होना चाहिए।

नमक जो बेस्वाद हो गया है, वह मिट्टी को निषेचित नहीं कर सकता। यह कुछ अच्छा नहीं कर सकता यहाँ तक की खाद के ढेर का भी नहीं। घमंडियो और कानून के शिक्षकों के औपचारिक, कानूनी धर्म, जिन्होंने परमेश्वर के कानून पर अपने स्वयं के कई विचारों और निर्णयों को लागू किया, उन्होंने केवल लोगों पर बोझ डाला है। यह बेस्वाद नमक जैसा हो गया है। इन लोगों का इजराइल के समाज पर कोई अच्छा प्रभाव नहीं था और उन्हें परमेश्वर के राज्य से बाहर कर दिया जाएगा। (मत्ती 8:12; 21:42–44) यीशु ने अपने श्रोताओं को चेतावनी दी कि जो लोग सत्य के ज्ञान में प्रशिक्षित थे और बाद में उन्होंने पवित्र आत्मा के उकसाने के खिलाफ खुद को दृढ़ किया और मसीह के खिलाफ उनके विरोध में कठोर हो गए, वे पश्चाताप नहीं कर पाएंगे (मत्ती 12:32; इब्रानियों 6:4–6; 10:26–31)। यीशु मसीह के प्रति निष्ठा कायम करना नितांत आवश्यक है और मनुष्य की पाप करने के स्वभाव की लालसा से कभी सामंजस्य नहीं बना सकता। यीशु ने अपने श्रोताओं को चेतावनी दी, ''जिसके पास सुनने के लिए कान हैं, वह उसे सुन ले'' (लूका 14:35; प्रकाशितवाक्य 2:7)। इसका मतलब यह है कि जब कोई व्यक्ति यीशु मसीह के शब्दों को सुनता है, तो उसे देरी नहीं करनी चाहिए, लेकिन तुरंत कार्य करना चाहिए !

---

3. <u>दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।</u>

चर्चा करें। इस दृष्टांत में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?
ध्यान दें।

यीशु किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं। संदर्भ के संबंध में विवरण की व्याख्या की जानी चाहिए।

एक राजा दूसरे राजा के खिलाफ युद्ध में जाने वाला है। ये प्रासंगिक विवरण हैं। संदर्भ में, पहला राजा उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो यीशु मसीह का शिष्य बनने की इच्छा रखता है या चाहता है, अर्थात आप और मैं। दूसरा राजा, जिसके पास बहुत अधिक सेना है, यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करता है!

पहले राजा को पहले इस बात पर विचार करना चाहिए कि क्या वह दूसरे राजा का विरोध करने में सक्षम है जो बहुत अधिक सेना के साथ आगे बढ़ रहा है। यह एक आवश्यक विवरण है, क्योंकि यह दृष्टांत का केंद्रीय बिंदु या मुख्य संदेश है। युद्ध में जाने से पहले हर राजा या सेनापति अपनी बाधाओं और अपनी रणनीति पर विचार करता है।

पहले राजा को संभावनाओं पर विचार करना चाहिए। इस दृष्टांत का सार यह है कि प्रत्येक व्यक्ति यह निर्णय लेने के लिए जिम्मेदार है कि वह यीशु मसीह का शिष्य बनेगा या नहीं। उसे एहसास होना चाहिए कि यीशु मसीह और उसके बेशुमार स्वर्गदूत उससे से कई गुना मजबूत हैं! उसे एहसास होना चाहिए कि उसे यह एक पूर्ण महत्वपूर्ण निर्णय लेना हैः यीशु मसीह का विरोध करना या यीशु मसीह को अधीन करना!

इसके बाद पहले राजा को चुनना होगा और कार्य करना होगा। कूदने से पहले उसे ध्यान से सोचना चाहिए। लेकिन उसे कूदना ही होगा! उसे इसमें देरी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि दूसरा राजा पहले से ही अपने रास्ते पर है! यीशु मसीह आपसे मिलने के लिए पहले से ही मौजूद है और वह पूर्ण अधीनता की माँग करता है क्योंकि वह राजाओं का राजा है। (प्रकाशितवाक्य 17:12-14)। आप उसके दूसरे आगमन पर उसका सामना करेंगे, लेकिन बहुत पहले जब आप मरेंगे! आपको तुरंत चुनना और कार्य करना होगा और आपको देरी नहीं करनी चाहिए! यीशु मसीह के साथ इस महत्वपूर्ण बैठक (टकराव) से कोई भी नहीं बच सकता है। आपको स्वतंत्र रूप से अधीन होना होगा या नष्ट होना होगा!

---

4. **दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानें।**

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

लूका 14:1-33 में लापरवाह राजा का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में शिष्यत्व" के बारे में सिखाता है। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "हर व्यक्ति यीशु मसीह का शिष्य बनने या उसके खिलाफ चुनाव करने के लिए जिम्मेदार है। यद्यपि उसे इस बात पर विचार करना चाहिए कि कौन सी रणनीति सबसे अच्छी है, उसे अवश्य कार्य करना चाहिए! उसे खुद को चुनना और अधीन होना होगा, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह पहले से ही उसके पास आने को रस्ते पर है! यीशु मसीह के संबंध में निष्पक्षता असंभव है! "कीमत का अनुमान लगाने और फिर उसके राज के लिए पूरे दिल से अधीन होने के लिए परमेश्वर की प्रारंभिक मांग को चुनना मानवीय प्रतिक्रिया है। यीशु मसीह को अपने दिल और दिमाग और आत्मा और सामर्थ्य से प्यार करने का यही मतलब है।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश केवल एक की पसंद की कीमत और परिणामों पर विचार करने से अधिक है। पहले राजा की पसंद इस बात के बीच नहीं थी कि वह हमला करे या तटस्थ रहे, लेकिन हमला किए जाने के बीच (क्योंकि वह निश्चित रूप से होने वाला था!) या शांति के लिए विनती करें (क्योंकि यह अपरिहार्य हमले को रोकने का एकमात्र तरीका होगा)।

जबकि उतावले निर्माणकर्ता के पास अभी भी निर्माण करने या नहीं बनाने का विकल्प था, पहले राजा पर हमला किया गया था। उसे तटस्थ रहने का चयन करने की कोई स्वतंत्रता नहीं थी। एक विकल्प उस पर मजबूर किया गया था! उसे चुनना होगा! इसी तरह, हर इंसान को चुनना और कार्य करना चाहिए। यीशु मसीह का विरोध करें या उसके अधीन हो जाये। यीशु मसीह के संबंध में निष्पक्षता असंभव है! भले ही कोई धार्मिक हो या न हो, उसे चुनना होगा और उसे अवश्य कार्य करना होगा!

सभी लोग पर फिर से उन पर पापी प्रकृति द्वारा (रोमियों 7:14-25; गलातियों 5:17), उनके चारों ओर शैतानी और उनके चारो ओर (यूहन्ना 15:18) मसीही-विरोधी संसार और शैतान के द्वारा और उनके ऊपर बुरी आत्माओं की सेना के द्वारा हमला किया जा रहा हैं (इफिसियों 6:12) पापी प्रकृति दरवाजे पर पाँव पसार रही है और इसकी इच्छा कब्जा करने और नष्ट करने की है। (उत्पत्ति 4:7)। पापी दुनिया और पाप की इच्छाओं पर उसकी अपील बहुत मजबूत है। (1यूहन्ना 2:15-17; लूका 8:14)। और शत्रु, शैतान चारों ओर से तलाश कर रहा है, और निगलने की फिराक में है (1पतरस 5:8)।

लेकिन स्वयं यीशु मसीह भी हमले पर है! चूँकि, पाप, अपराध, शर्म, अपवित्रता, शक्ति और पाप की दासता से लोगों को बचाने के लिए वह दुनिया में पहली बार आया था, इसलिए वह अपने वचन, अपनी आत्मा और अपने मजदूरों (प्रचारकों) के माध्यम से लोगों के पास आता है। अपने दूसरे आगमन पर वह मसीहियों के लिए अंतिम उद्धारकर्ता के रूप में आएगा, लेकिन गैर-मसीहियों के लिए अंतिम न्यायधीश के रूप में भी। वह खुद अभी दिल के दरवाजे पर खड़ा है और दस्तक दे रहा है। वह अंदर आने की इच्छा रखता है। यह किसी व्यक्ति को निर्णय लेने के लिए मजबूर करता है। (प्रकाशितवाक्य 3:20) लोगों के लिए उनका आना अपरिहार्य और अप्रतिरोध्य है!

एक आदमी को चुनना होगा। यीशु कहते हैंः "अतः मन फिर, नहीं तो मैं तेरे पास शीघ्र ही आकर अपने मुख की तलवार से उनके साथ लड़ूंगा।" (प्रकाशितवाक्य 2:16)। "पश्चताप। यदि तू जागृत न रहेगा तो मैं चोर के समान आ जाऊंगा, और तू कदापि न जान सकेगा कि मैं किस घड़ी तुझ पर आ पड़ूंगा।" (प्रकाशितवाक्य 3:3)।

शिष्यत्व ईश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग, उनके पापी स्वभाव के हमलों से, उनके आस-पास के मसीही -विरोधी दुनिया और एक तरफ उनके ऊपर की राक्षसी दुनिया और दूसरी तरफ यीशु मसीह के बारे में विचार करना चाहिए, उन्हें विचार करना चाहिए कि उन्हें क्या देना चाहिए , त्याग दे या जाने दे, ताकि वे कुचलेजाने वाली पराजय से और न सुधरे जाने लायक आत्मिक और नैतिक नुक्सान से और अधिक कष्ट न उठाना पड़े।

सबसे खराब रणनीति और सबसे मूर्खतापूर्ण बात वे यह सोच सकते हैं कि वे निष्पक्ष रह सकते हैं और इसलिए निर्णय लेने की जरूरत नहीं है! सबसे अछि रणनीति और केवल बुद्धिमान, समझदार और उचित बात एक निर्णय लेना होगा, एक प्रतिबद्धता बनाना। यह यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर के साथ सामंजस्य स्थापित करना है और अपने जीवन के सभी दिनों में यीशु मसीह का शिष्य के रूप में पालन करना है (2कुरिन्थियों 5:17-20)।

---

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत मार्गों के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

खोजें और चर्चा करें। कैसे बाइबल की का प्रत्येक वाक्यांश क्या सिखाता है, दृष्टांतों की शिक्षा से उसकी तुलना करें ?

लूका 12:57–59। शिष्यत्व के लिए सबसे अच्छी रणनीति यह है कि किसी मुकदमे में उनके लिए सही क्या है। यदि कोई मुकदमा नहीं जीत सकता है, तो अदालत से बाहर समझौता करने के लिए निवेदन करें। अंतिम निर्णय (मानव इतिहास में बहुत अंतिम परीक्षण) के संबंध में, सबसे अच्छी रणनीति यीशु मसीह के साथ सामंजस्य स्थापित करना है, सभी न्यायाधीशों के न्यायाधीश। शाश्वत निंदा से बचने का और कोई उपाय नहीं है!

लूका 13:1–5। शिष्यत्व के लिए सबसे अच्छी रणनीति पश्चाताप करना और यीशु मसीह पर विश्वास करना है, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए! यीशु ने कहा, ''जब तक तुम पश्चाताप नहीं करते, तुम भी सब नष्ट हो जाओगे।"

2कुरिन्थियों 6:2। शिष्यत्व के लिए सबसे अच्छी रणनीति तुरंत कार्य करना है न कि शिथिलता। ''अब मोक्ष का दिन है!"

मत्ती 19:20–24। शिष्यत्व की सबसे अच्छी रणनीति यह है कि एक शिष्य के रूप में यीशु का अनुसरण करने के मार्ग में जो कुछ आता है उसे छोड़ देना चाहिए! किसी के लिए यह कुछ संपत्ति छोड़ना हो सकता है। दूसरे के लिए यह शक्ति, सफलता या प्रसिद्धि की कुछ महत्वाकांक्षाओं को छोड़ना हो सकता है। और फिर भी दूसरे के लिए कुछ रिश्तों को छोड़ना पड़ सकता है। (नीतिवचन 1:10,15; इफिसियों 5:5–7)। ऐसा करने से, वह यीशु मसीह, राजाओं के राजा से इस दुनिया में लौटने के पक्ष में मिलने का आश्वासन देगा!

लूका 14:34–35; 2कुरिन्थियों 2:14–16; 3:2–3। शिष्यत्व के लिए सबसे अच्छी रणनीति परिवार, पड़ोसियों, विरोधियों और यहां तक कि दुश्मनों सहित किसी के समाज पर अच्छा प्रभाव डालना है। एक लड़ाई जीतने के लिए सबसे अच्छी रणनीति नमक की तरह नैतिक और आत्मिक क्षय का मुकाबला करना है। यह सुसमाचार की खुशखबरी को सुगंधित सुगंध की तरह फैलाना है। यह लोगों के बीच एक पारदर्शी मसीही जीवन जीना है, जैसे कि एक पत्र जिसे सभी जानते हैं और पढ़ते हैं।

ग. परमेश्वर के राज्य में शिष्यत्व के बारे में दृष्टांतों की मुख्य शिक्षाओं और पाठों का सारांश।

परमेश्वर के राज्य में शिष्यत्व के बारे में निम्न दृष्टांत हैं:

- लूका 14:28–30 में उतावले निर्माणकर्ता का दृष्टान्त।
- लूका 14:31–33 में लापरवाह राजा का दृष्टान्त।
- लूका 9:61–62 में हल जोतने वाले का दृष्टान्त।. (देखें नियमावली 11, परिशिष्ट 11)

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में शिष्यत्व के बारे में दृष्टांतों के मुख्य उपदेश या पाठ क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* या *मानना* सिखाया और उसने हमें क्या *बनना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें। मसीहियों को यीशु मसीह का चेला बनना चाहिए।

(1) एक व्यक्ति को शिष्यत्व की कीमत पर विचार करना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति शिष्यत्व की कीमत पर विचार करने के लिए जिम्मेदार है, विशेष रूप से अपने माता–पिता, अपनी पत्नी और बच्चों, अपने भाइयों और बहनों और अपने स्वयं के जीवन और महत्वाकांक्षाओं के लिए अपने संबंधों के संदर्भ में। कीमत यह हो सकती है कि वह अपने माता–पिता, परिवार और यहां तक कि

अपनी महत्वाकांक्षाओं और सुरक्षा के ऊपर अपने रिश्ते के ऊपर यीशु मसीह को और यीशु मसीह के लिये चुनना होगा।

(2) एक व्यक्ति को मसीह के लिए या उसके विरुद्ध चयन करना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति यीशु मसीह के शिष्य बनने के लिए या उसके खिलाफ चुनाव करने के लिए जिम्मेदार है, अर्थात, राजाओं के राजा के अधीन होने या उसकी मांग का विरोध करने के लिए जिम्मेदार है। यीशु मसीह के संबंध में निष्पक्षता असंभव है! उसे इस बात पर विचार करना चाहिए कि यीशु मसीह के साथ अपने संबंधों में भारी हार न भुगतने के लिए उसे एक तरफ क्या करना चाहिए, क्या देना चाहिए या क्या कहना चाहिए। थोड़ा सा मसीही होने जैसी कोई बात नहीं है, जैसे कि परमेश्वर के लिए किसी तरह का निर्णय लेना या जीवन–शैली में कुछ बाहरी परिवर्तन करना, और फिर अपने जीवन के साथ जैसा वह खुद तय करता है, वैसा ही करना।

सबसे खराब रणनीति और सबसे मूर्खतापूर्ण बात जो एक व्यक्ति कर सकता है, वह यह है कि वह सोचता है की वह निष्पक्ष रह सकता है और इसलिए उसे निर्णय लेने की आवश्यकता नहीं है! सबसे अच्छी रणनीति यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर के साथ सामंजस्य स्थापित करना है। केवल बुद्धिमान, समझदार और वाजिब बात यह है कि यीशु मसीह को अपने शिष्य के रूप में पालन करें। मसीही शिष्यत्व का अर्थ है यीशु मसीह और उसकी शिक्षाओं के प्रति पूरे समर्पण के साथ अधीन होना।

(3) व्यक्ति को अपने जीवन के प्रत्येक दिन शिष्य होना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति जिम्मेदार है कि वह यीशु मसीह को हर दिन और अपने जीवन के सभी दिनों को अंत तक एक शिष्य के रूप में पालन करने के लिए पूरी तरह से वचनबद्ध हो। यीशु मसीह शिष्यत्व में अविभाजित प्रतिबद्धता की माँग करता है!

प्रत्येक व्यक्ति जिम्मेदार है कि वह यीशु मसीह को हर दिन और अपने जीवन के सभी दिनों को अंत तक एक शिष्य के रूप में पालन करने के लिए पूरी तरह से वचनबद्ध हो। यीशु मसीह शिष्यत्व में अविभाजित प्रतिबद्धता की माँग करता है!

तीन दृष्टांत एक साथ सिखाते हैं कि एक शिष्य को शिष्यत्व की कीमत की गणना करनी चाहिए! उसे शिष्यत्व के लिए निर्णय लेना चाहिए! हर दिन उसे पीछे मुड़ने से इंकार करना चाहिए और खुद को आगे की ओर देखते रहना चाहिए क्योंकि वह यीशु मसीह का अनुसरण करता है!

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी–छोटी प्रार्थना करने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***
या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी

प्रतिलिपि लेने दें)।

1. <u>समर्पण</u>। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "उतावला निर्माणकर्ता" और "लापरवाह राजा" के दृष्टांत का <u>प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें</u>।
3. <u>परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय</u>। प्रतिदिन **यशायाह 5,6,7 और 8** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. <u>स्मरण करना</u>। **(14) रोमियों 10:12।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. <u>बाइबल अध्ययन</u>। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 9:1–33।**
   बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. <u>प्रार्थना</u>। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी <u>नोटबुक का अद्यतनीकरण करें</u>। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।